पुण्यतिथि

एक जन्मसिद्ध के अवतरण का सम्मान

आशा रिचर्ड्स द्वारा लिखित व्याख्या

८ अगस्त, सन् १९६१ को—महान सिद्ध, अवधूत, भगवान नित्यानन्द पृथ्वीलोक से प्रयाण कर, परम चिति के असीम आनन्द में विलीन हो गए। ग्रैगोरियन कैलेन्डर के अनुसार इस दिन, ८ अगस्त को, भगवान नित्यानन्द की सौर पुण्यतिथि होती है।

भगवान नित्यानन्द, बाबा मुक्तानन्द के श्रीगुरु थे। बाबा जी, भगवान नित्यानन्द को अपने *परमप्रिय* गुरुदेव कहते थे और भगवान नित्यानन्द से ही बाबा जी को १५ अगस्त, १९४७ को शक्तिपात दीक्षा प्राप्त हुई थी।

भगवान नित्यानन्द के महानिर्वाण के समय बाबा मुक्तानन्द वहाँ उपस्थित थे और उन्होंने वहाँ जो देखा व अनुभव किया, उसका बड़ा ही मर्मस्पर्शी वर्णन उन्होंने अपनी पुस्तक 'गणेशपुरी निवासी भगवान नित्यानन्द' में किया है।

***

भारत में, जब एक दिव्यात्मा इस लोक से प्रयाण करती है, उस दिन को 'पुण्यतिथि' कहा जाता है यानी पुण्य का दिवस। भगवान नित्यानन्द [या 'बड़े बाबा' जैसा कि उन्हें प्रेम से सम्बोधित किया जाता है] जैसे महात्मा जब इस संसार से प्रयाण करते हैं तो उनकी शक्ति और अपने जीवनकाल में उनके द्वारा किए गए सत्कर्मों के संचित अनन्त पुण्यफल उनके भक्तों के कल्याण व उद्धार हेतु इसी धरा पर बने रहते हैं। ऐसी महान विभूति के प्रयाण का दिन, उनके भक्तों के लिए उनका स्मरण करने व उनके प्रति कृतज्ञता अर्पित करने का अवसर है। इस दिन भक्तगण प्रार्थनाएँ करते हैं, पूजा व अन्य पारम्परिक अनुष्ठान करते हैं तथा भगवान का, श्रीगुरु का व जिन महात्मा की पुण्यतिथि है, उनका स्तुतिगान करते हैं, संकीर्तन करते हैं। पुण्यतिथि, उत्सव मनाने का अतिपावन दिवस है।

'पुण्यतिथि' शब्द में, संस्कृत व हिन्दी भाषा के शब्द 'पुण्य' का आध्यात्मिक साधकों के लिए बड़ा महत्त्व है और यहाँ मैं इसी शब्द का अन्वेषण करूँगी।

'पुण्य' शब्द के कई सूक्ष्म अर्थ हैं, जो हैं—वह जो शुभ है, मंगलमय है, निर्मल है, सुखद, अच्छा, उचित है, सद्गुणसम्पन्न, सुपात्र, शुद्ध है, पावन, पवित्र और दिव्य है।[१] पुण्यकर्म यानी सत्कर्म करने से व्यक्ति का पुण्य संचित होता है। यह पुण्य एक धार्मिक जीवन की अदृश्य पूँजी है; ऐसा पुण्य, व्यक्ति

के सांसारिक जीवन को रूपान्तरित कर उसे धार्मिक व पारमार्थिक बना देता है, एक ऐसा जीवन जो उसे भगवान की ओर ले जाता है।

पुण्यकर्म से अर्जित पुण्यफल न केवल इस जन्म में बल्कि अगले जन्म में भी मनुष्य का हित करता है। ऐसे पुण्यकर्म कर पाना भी अपने आप में एक वरदान माना जाता है; यह इस बात का प्रमाण है कि अपने पूर्वजन्मों में वह मनुष्य गुणवान था और उसका आचरण ऐसा था जिससे दूसरों का कल्याण हुआ।

***

'पुण्य' शब्द के कई अर्थों के अन्तर्गत एक परिभाषा जिसकी ओर मैं विशेषरूप से आकर्षित हुई हूँ, वह है 'शुद्धता।' मैं भारत में एक हिन्दू परिवार में पली-बढ़ी हूँ, और इस दौरान मैंने सीखा है कि शुद्धता की धारणा का अत्यन्त महत्त्व है। मुझे याद है कि विशेष पर्वों पर हमारे घर के कोई बुजुर्ग व्यक्ति हमारे कुलदेवता की पूजा किया करते। उस पूजा-अनुष्ठान का आरम्भ करने से पूर्व वे स्नान करते, स्वच्छ लाल रंग की रेशमी धोती पहनते और उसके बाद ही पूजा-वेदी की ओर बढ़ते। हम बच्चों को सतत यह याद दिलाया जाता कि हम यह ध्यान रखें कि हम पूजा करने वाले उस व्यक्ति को स्पर्श न करें। यदि, जाने-अनजाने में हमने उन्हें स्पर्श कर भी लिया तो उन्हें स्नानादि की वही विधि पुनः दोहराकर, पुनः नए वस्त्र पहनकर पूजा के लिए तैयार होना होता था। यह तो मैं बाद में ही समझ पाई कि किसी पूजा-प्रार्थना की विधि के पूर्व की गई शरीर-शुद्धि या बाह्य शुद्धिकरण, आन्तरिक शुद्धिकरण का प्रतीक है।

श्रीभगवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं :

येषां त्वन्तगतं पापं जनानां पुण्यकर्मणाम्।
ते द्वन्द्वमोहनिर्मुक्ता भजन्ते मां दृढव्रताः॥

परन्तु वे जिनमें पाप का अन्त हो गया है,
जिन मनुष्यों के कर्म शुद्ध [पुण्य] हैं;
वे द्वन्द्वों की मोहकारिणी शक्ति से मुक्त होकर
दृढ़ व्रत के साथ मुझे भजते हैं।[२]

श्रीभगवद्गीता का उपदेश है कि मोक्ष प्राप्त महात्मा अर्थात् भगवान के साथ ऐक्य प्राप्त मुक्तात्मा के कर्म शुद्ध होते हैं। ऐसे महात्मा इस जगत को दिव्यत्व के प्राकट्य के रूप में देखते हैं। वे स्वयं अपने अन्तर्निहित दिव्यत्व का, लोगों व समस्त सृष्टि में निहित दिव्यत्व का सम्मान करते हैं और इस प्रकार

वे निरन्तर रूप से ईश्वर की आराधना करते हैं। परिणामस्वरूप उनके कर्म, द्वन्द्वों के प्रभाव से मुक्त होते हैं अर्थात् उनके कर्म उच्च-नीच, तेरा-मेरा, अच्छा-बुरा, सुखदायी-दुःखदायी, वांछित-अवांछित जैसी धारणाओं से मुक्त होते हैं।

ऐक्यबोध से पृथक होने के मिथ्याभाव के वशीभूत होकर व द्वन्द्वों के आकर्षण के प्रभाव में आकर कर्म करने के कारण अनेक मनुष्य अपनी अहंकारजनित इच्छाओं को सँजोना और उन्हें बढ़ावा देना चाहते हैं। ऐसी परिस्थिति में ही अशुद्ध कर्म हावी हो जाते हैं और गीता में वर्णित 'पाप' उत्पन्न होता है। पापकर्म वे कर्म होते हैं जो स्वार्थ, लोभ, क्रोध, ईर्ष्या और मोह जैसी नकारात्मक प्रवृत्तियों से उपजते हैं। वे हमारे मन को फँसा लेते हैं और इसे क्रूरता से जकड़ सकते हैं। वे हमें हमारी अपनी सच्ची आत्मा की अन्तर्जात अच्छाई व शुद्धता के अनुभव से दूर खींच ले जाते हैं।

इस दशा के लिए उपाय है, पुण्यकर्म करते रहना। पुण्यकर्म अर्थात् कल्याणकारी कर्म हमें सम्बल प्रदान करते हैं ताकि हम स्वयं अपनी दिव्यता और इस संसार में निहित दिव्यता के बोध को सशक्त कर सकें। जिन्हें मदद की ज़रूरत हो उनकी मदद करना, सच बोलने का साहस रखना, सत्यनिष्ठ रहना, चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में शान्त बने रहना, समस्त जीवों के प्रति दयालुताभरा व भद्र व्यवहार करना—ये सभी पुण्यकर्मों के उदाहरण हैं जिन्हें कहीं भी, किसी भी समय किया जा सकता है। ऐसे कर्म करने से हमें दिव्य सद्गुणों का विकास करने में मदद मिलती है, जैसे उदारता, शान्तचित्तता, बल, साहस या पराक्रम, करुणा, सम्मान और प्रेम। समय के साथ, हम अपने अन्दर इन सकारात्मक गुणों के एक भण्डार का निर्माण कर लेते हैं और फिर जब हम जीवन के उतार-चढ़ावों के बीच अपना रास्ता ढूँढ़ रहे होते हैं तो ये सद्गुण हमारे नित्य-सहचर बनकर हमें अपने लक्ष्य पर एकाग्र रहने में मदद करते हैं।

पुण्यकर्मों द्वारा हम मन के नकारात्मक संस्कारों की मलिनता को धो डालते हैं, हम मोहबन्धनों को परिश्रमपूर्वक नष्ट करते हैं और द्वैत की उस धारणा को दूर कर देते हैं जिसके कारण हमारी यह मिथ्या समझ बन जाती है कि जगत हमारी अपनी आत्मा से भिन्न है। जिस प्रकार नदी के निरन्तर प्रवाहमान रहने से उसके तल में मौजूद पत्थरों की सतह से मिट्टी बह जाती है, उसी प्रकार जागरूकता के साथ पुनः-पुनः भले कर्म, सत्कर्म—पुण्यकर्म—करते रहने से हम मन की अशुद्धियों को धोकर उसे स्वच्छ कर देते हैं। पुण्यकर्म मन को गति प्रदान करते हैं ताकि वह शुद्धिकरण की अपनी यात्रा में आगे बढ़ सके। ऐसा शुद्ध मन अन्तहीन आकाश के समान हो जाता है—जिसकी व्यापकता कल्पनातीत है।

***

एक महान आत्मा की पुण्यतिथि पर हम उनका सम्मान करते हैं और उनके असाधारण पुण्य के लिए कृतज्ञता अर्पित करते हैं। हम स्मरण करते हैं कि किस प्रकार उनके जीवन और उनके कर्मों से 'पुण्य' शब्द के समस्त उत्कृष्ट अर्थ प्रकट होते हैं व प्रसरित होते हैं। हम उनके प्रति अपनी कृतज्ञता अर्पित करते हैं कि उन्होंने इस धरती पर भौतिक रूप में अवतार लिया, साधकों के जीवन व साधना में उनका मार्गदर्शन किया, साथ ही हम उन लाभों के लिए भी अपनी कृतज्ञता अर्पित करते हैं जो हमें उन महात्मा की शक्ति से व उनके अकथनीय पुण्यकर्म से निरन्तर प्राप्त होते रहते हैं।

ऐसा करने के अनेक तरीक़े हैं; जिनकी पुण्यतिथि हम मना रहे हैं ऐसे महापुरुष का स्मरण करने के अनेक तरीक़े हैं। तथापि, भारत में ऐसे अवसर या दिन पर एक-दूसरे को शुभकामना देने का रिवाज *नहीं* है, उदाहरण के लिए हम किसी को शुभेच्छा देते हुए यह नहीं कहते, "शुभ पुण्यतिथि!" मैं आपको यह इसलिए बता रही हूँ क्योंकि सिद्धयोग पथ पर ऐसे कई अवसर हैं जब हम 'शुभ' शब्द का प्रयोग करते हैं। [उदाहरण के लिए, "शुभ गुरुपूर्णिमा"]।

मैं थोड़ा और विस्तार से समझाती हूँ। एक बात यह है कि 'शुभ' और 'पुण्य' का अर्थ एक ही है, जो कि मांगल्य को व्यक्त करता है और इसलिए दोनों का एक-साथ प्रयोग करना अर्थहीन है। इसके अतिरिक्त, किसी को "शुभ पुण्यतिथि" कहना या फिर "शुभ भगवान नित्यानन्द की पुण्यतिथि" कहना, उन्हें शुभ प्रयाण की शुभकामनाएँ देने जैसा है। यह ऐसी बात नहीं है जिसकी कामना कोई किसी जीवित प्राणी के लिए करे।

सिद्धयोगी होने के नाते यह हमारे लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है कि हम भगवान नित्यानन्द की पुण्यतिथि के सन्दर्भ में 'पुण्य' पर चिन्तन-मनन करें। बड़े बाबा एक जन्मसिद्ध थे अर्थात् उनका जन्म पूर्ण आत्मसाक्षात्कार के साथ हुआ था; जन्म से ही वे उस स्थिति में अवस्थित थे जो अहंकार की स्वार्थभावना तथा द्वैतबोध के परे है। जैसा कि उनका नाम दर्शाता है, वे 'नित्यानन्द' की स्थिति में रहते थे—वे नित्य अर्थात् चिरस्थायी आनन्द की स्थिति में रहते थे, और इस पृथ्वीग्रह पर उनकी उपस्थिति अपने आप में उदारता का प्राकट्य थी।

बड़े बाबा का हर कर्म, उनका हर शब्द, उनके समक्ष आने वालों पर किया गया उनका हर दृष्टिपात—यह सब कुछ कल्याणकारिता से, सद्गुणों व साधुता से, मांगल्य से ओतप्रोत था; यह 'पुण्य' से ओतप्रोत था। इसके दर्शन हमें होते हैं जब हम देखते हैं कि किस प्रकार बड़े बाबा ने हज़ारों लोगों के जीवन को स्पर्श किया, अपने पास आने वाले अनगिनत लोगों का दुःख दूर किया और उन सभी की साधना को मार्गदर्शित किया जिनमें भगवान को जानने की ललक थी। आज भी, सम्पूर्ण भारत में हमें लोगों के घरों में, उनकी पूजा-वेदी में बड़े बाबा की तस्वीर देखने को मिलती

है—साधारण-से घरों में भी और समृद्ध घरों में भी; चाय की छोटी-मोटी दुकानों में भी और बड़े-बड़े व्यावसायिक प्रतिष्ठानों में भी, तथा शहरों, नगरों और छोटे गाँवों में भी।

इस धरती पर बड़े बाबा की उपस्थिति से उन सभी को अनगिनत आशीर्वाद प्राप्त हुए, जिन्हें बड़े बाबा का दर्शन-लाभ हुआ, जिन्होंने बड़े बाबा की पूजा की, जिन्होंने बड़े बाबा का स्मरण कर उनकी सिखावनियों को हृदय में उतारा; और बड़े बाबा की कृपा इस विश्व में असंख्य जीवों पर आशीर्वादों की वर्षा करती रहती है। यही है वह जिसका हम पुण्यतिथि के अवसर पर सम्मान करते हैं और जिसके लिए हम अपने पूरे हृदय से कृतज्ञता अर्पित करते हैं।

© २०२२ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

---

[१] Monier Monier-Williams, *A Sanskrit-English Dictionary* [दिल्ली, भारत : मोतीलाल बनारसीदास, १९९५] पृ. ६३२।

[२] श्रीभगवद्गीता ७.२८; स्वामी कृपानन्द द्वारा लिखित *Jnaneshwar's Gita: A Rendering of the Jnaneshwari* से उद्धृत [साउथ फ़ॉल्सबर्ग, न्यूयॉर्क : एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन, १९९९] पृ ९६।